पर्यावरण के प्रति देखभाल की भावना से शुरू हुए इको क्लब

कीर्ति लांबा

विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने उद्देश्य से भारत सरकार के मिशन लाइफ़ के लिए इको क्लब एक महत्त्वपूर्ण पहल है। इस क्लब का उद्देश्य स्थाई जीवन के लिए आवश्यक मूल्यों और व्यवहारों का विकास करना है। इसमें विद्यार्थियों को पर्यावरण-हितैषी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिससे प्रकृति के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना विकसित होती है। इस लेख में दिल्ली के एक सरकारी विद्यालय की शिक्षिका द्वारा की गई ऐसी ही पहल के अनुभव साझा किए गए हैं।

कक्षा में जो सिखाया जाना है उसका जुड़ाव जब विद्यार्थियों को अपने आस-पास के जीवन से जुड़ता दिखता है, तब उनका सीखना सुनिश्चित होता है। मैंने अपनी कक्षाओं में इस जुड़ाव को बनाने करने का प्रयास किया जिसके नतीजे लगभग चौंकाने वाले मिले। कक्षा 7 में सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में 'पर्यावरण' नाम का और कक्षा 8 में 'संसाधन' नाम का पाठ है। ये दोनों पाठ इको क्लब का निर्माण करके सतत विकास के लिए शिक्षा (Education for Sustainable Development—ESD) प्रदान करने के लिए अच्छा अकादमिक आधार प्रदान करते हैं।

इन दोनों पाठों के सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने विद्यार्थियों में LiFE (Lifestyle for Environment—पर्यावरण के लिए जीवन शैली) की शुरुआत की। इसके अन्तर्गत मैंने विद्यालय में इको क्लब, जो अब Eco Clubs for Mission LiFE कहलाते हैं, का गठन किया। इस क्लब का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और चेतना को बढ़ाना है।

> **"विद्यार्थियों के मिट्टी से सने हाथ पर्यावरण को बचाने के लिए कुछ करने के उनके पक्के इरादे का सबूत हैं।"**

चित्र 1: विद्यालय परिसर में पौधे लगाने के लिए क्यारी बनाते विद्यार्थी

क्लब की स्थापना और इसके उद्देश्य

इको क्लब की शुरुआत कक्षा 7 के विद्यार्थियों के लिए 'वॉक एंड टॉक' सत्र के आयोजन के साथ हुई जिसका उद्देश्य उन्हें जैविक (biotic) और अजैविक (abiotic) पर्यावरण की अवधारणाओं को समझाना था। 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के साथ जुड़कर विद्यार्थियों ने अपनी माताओं को समर्पित करते हुए एक-एक पौधा लगाया, और उनकी देखभाल करने का संकल्प लिया। कुछ विद्यार्थियों ने अपने पौधों के नाम और अन्य वैज्ञानिक जानकारी वाले प्लेकार्ड अपने हाथ से तैयार कर उन्हें पौधों के पास लगाया। अगली सुबह, बिना किसी शिक्षक के कहे, विद्यार्थी अपने लगाए हुए पौधों का निरीक्षण करने के लिए जल्दी विद्यालय आ गए। कुछ विद्यार्थी पौधों को पानी देने के लिए अपनी इच्छा से आगे आए। विद्यार्थियों में अपने पौधों को बढ़ते देखने का इन्तज़ार बहुत ख़ूबसूरत था। यह प्रकृति के प्रति जिज्ञासु होने, और उसके साथ गहरा रिश्ता बनने की शुरुआत थी। इस अनुभव के माध्यम से विद्यार्थी तथ्यों को निष्क्रिय रूप से जानने वाले नहीं, बल्कि पर्यावरण के लिए परिवर्तन लाने वाले सक्रिय अभ्यासी भी बन गए। इस तरह, यह क्लब सच्ची, सामूहिक जिज्ञासा, और पर्यावरण के प्रति देखभाल की भावना से शुरू हुआ।

> **इको क्लब की रौनक भी बढ़ रही है, और विद्यार्थियों की समझ भी। अच्छा यह भी था कि इको क्लब की ज़िम्मेदारी वे ख़ुद ही ले रहे थे। मेरी भूमिका मार्गदर्शन और हौसला बढ़ाने भर की थी।**

इसी तरह, कक्षा 8 में, 'संसाधन' नामक अध्याय में सतत विकास विषय ने क्लब के उद्देश्य पर एक बहस छेड़ दी। विद्यार्थियों ने इस विषय पर गहराई से सोचते हुए सवाल करने शुरू किए। उनके सवाल मेरा हौसला बढ़ा रहे थे। जैसे–

कक्षा 7 की आयशा ने पूछा, "मैम, पानी एक नवीकरणीय संसाधन होने के बावजूद इसकी कमी क्यों है? यह विरोधाभास क्यों? ख़बरों में रोज़ पानी की दुर्लभता के बारे में सुनने को मिलता है, ऐसा क्यों?" आयशा द्वारा उठाया गया यह तर्कसंगत प्रश्न कक्षा में एक गम्भीर चिन्तन का मुद्दा बन गया। यह जिज्ञासा कक्षा 7 के पाठ 'पर्यावरण' की चर्चा के दौरान उभरकर आई। आयशा के इस प्रश्न ने विद्यार्थियों को 'किताबी सिद्धान्त' से 'धरातल की सच्चाई' की ओर मोड़ा। कक्षा में हुई चर्चा की दिशा सीमित मीठे पानी की उपलब्धता, इसके असमान भौगोलिक वितरण और मानव द्वारा बर्बादी से होती हुई सीधे हमारे 'इको क्लब फ़ॉर मिशन LiFE' के एक उद्देश्य–'जल संरक्षण' तक पहुँची। विद्यार्थियों ने न केवल पानी बचाने की शपथ ली, बल्कि इसे अपनी जीवन शैली का हिस्सा बनाने का सामूहिक संकल्प भी लिया।

कक्षा 8 की निशा ने पूछा, "मैम, हम लोग प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कैसे कर सकते हैं?"

चित्र 2 : पौधे के पास अपने हाथ से तैयार कर वैज्ञानिक जानकारी वाले प्लेकार्ड लगाते विद्यार्थी

"तो क्या प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने के लिए हमें उनका उपयोग नहीं करना चाहिए?" इस पर आयशा ने उसे फ़ौरन दुरुस्त करते हुए कहा, "अरे, इसका मतलब उपयोग न करना नहीं, बल्कि दुरुपयोग न करना है।"

निशा को बात कुछ समझ नहीं आई तो आयशा उसे बताने लगी कि नदियों में कचरा फेंकना दुरुपयोग है, नदियों से सिंचाई करना उपयोग है। पानी को पीना उपयोग है, लेकिन उसे बिना ज़रूरत के बहने देना दुरुपयोग है।

"अच्छा-अच्छा, यह तो मैं समझती हूँ, मुझे लगा कोई और बात होगी।" निशा ने आश्वस्त होते हुए कहा।

मैं विद्यार्थियों को इस तरह सवाल करते और एक दूसरे के सवालों के जवाब देते हुए देखकर आश्वस्त थी कि इको क्लब अपने उद्देश्य में ठीक दिशा की ओर बढ़ रहा है।

विद्यार्थियों के सवालों के जवाब न देकर मैंने कुछ ऐसी गतिविधियाँ क्लब में रखीं जिनमें वे अपने सवालों के जवाब तक ख़ुद पहुँच सकें। मसलन, मैंने उनके सवालों को वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय बना दिया। अब विद्यार्थी इस बारे में ख़ुद तथ्य जमा कर रहे थे कि पानी की कमी क्यों हो रही है। वाद-विवाद के अलावा पोस्टर बनाना, निबन्ध लिखना, कठपुतली शो के लिए स्क्रिप्ट लिखना, आदि गतिविधियाँ भी शामिल कीं।

'कौशल बोध' विषय के तहत जैव विविधता प्रोजेक्ट पर चर्चा के दौरान जाह्नवी ने एक अत्यन्त मार्मिक और तर्कसंगत प्रश्न उठाया : "आजकल हमें गौरैया चिड़ियाँ क्यों नहीं दिखाई देतीं?"

इस एक प्रश्न ने कक्षा में एक 'भावनात्मक तत्परता' पैदा कर दी। हमने गहराई से पड़ताल की कि कैसे कंक्रीट के आधुनिक भवन (जिनमें घोंसलों के लिए कोई जगह नहीं बची) और मोबाइल टावरों का विकिरण हमारे शहरी पारिस्थितिकी तंत्र को संकट में डाल रहे हैं। इस सामूहिक विमर्श की सार्थकता तब

सिद्ध हुई जब हमारी चर्चाओं के निष्कर्ष को 'मिशन LiFE' के औपचारिक उद्देश्य से जोड़ा गया।

पर्यावरण की इस समझ को 'लोकतंत्र' के सिद्धान्तों से जोड़ते हुए, कक्षा 6 के सामाजिक विज्ञान के अध्याय 'आधारभूत लोकतंत्र : ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय सरकार' के दौरान विद्यार्थियों ने एक जीवन्त 'बाल पंचायत' का मंचन किया। जाह्नवी ने सिर पर पगड़ी बाँधकर 'सरपंच' की भूमिका निभाई, जहाँ 'आम जनता' बने विद्यार्थियों ने स्वच्छता और पानी की कमी जैसे गम्भीर विषयों पर सवाल पूछे। सरपंच के रूप में जाह्नवी ने एक परिपक्व समाधान प्रस्तुत किया—'कचरा पृथक्करण' केवल अधिकारियों का काम नहीं, बल्कि हर नागरिक की जवाबदेही है। प्रशासन के साथ-साथ नागरिकों की भागीदारी भी उतनी ही अनिवार्य है। विद्यार्थियों ने महसूस किया कि पर्यावरणीय समस्याएँ समाज से अलग नहीं हैं।

इको क्लब की रौनक भी बढ़ रही है, और विद्यार्थियों की समझ भी। अच्छा यह भी था कि इको क्लब की ज़िम्मेदारी वे ख़ुद ही ले रहे थे। मेरी भूमिका मार्गदर्शन और हौसला बढ़ाने भर की थी। मैंने महसूस किया कि धीरे-धीरे विद्यार्थियों के सवाल गहरे होने लगे थे। आपस में ही अपने सवालों को रखना, उन पर बात करना, अपनी बात को ठीक से रखने हेतु अपनी समझ को विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तकों से लेकर लाइब्रेरी की किताबें खँगालना भी शामिल होने लगा। कभी-कभी मैं उन्हें कुछ नए सवालों की तरफ़ भी प्रेरित करती। इससे उन्हें नए आइडिया मिलते, और उनकी खोज भी शुरू हो जाती। जैसे, मैंने पूछा कि आख़िर नल बन्द करने से हम कितना ही पानी बचा सकते हैं; या एक बिजली का स्विच बन्द करके कितनी ही ऊर्जा बच जाएगी; आदि। मुझे आश्चर्य हुआ कि अगले दिन विद्यार्थी डेटा के साथ बात कर रहे थे कि एक घण्टे अगर नल खुला रह गया, या बिजली का स्विच खुला रह गया तो कितनी ऊर्जा या पानी बर्बाद होगा। फिर हिसाब लगाया कि अगर विद्यालय के हर विद्यार्थी ने एक बाल्टी पानी बर्बाद किया तो कितना पानी बर्बाद हुआ होगा। इसी तरह, अगर शहर के हर व्यक्ति ने पानी बर्बाद किया, या फिर राज्य के लोगों ने तो...

मैंने उन्हें विद्यालय स्तर पर जल संसाधनों के प्रबन्धन के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि उनके सोचने में और स्पष्टता आए।

विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ रहा था। उन्होंने इको क्लब के लिए कुछ थीम तय कीं :

1. स्वस्थ जीवन शैली अपनाना;
2. ऐसा खान-पान अपनाना जो प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हो;
3. खाना हो या बिजली, पानी या अन्य प्राकृतिक संसाधन, उनकी बर्बादी को रोकना;
4. प्लास्टिक के उपयोग को रोकना; आदि।

विद्यार्थियों ने पहले यह देखा कि विद्यालय में कहाँ-कहाँ संसाधनों की बर्बादी हो रही है, और कहाँ-कहाँ उन्हें काम करने की ज़रूरत है। इसमें कुछ बातें निकलकर आईं। जैसे—

- मिड-डे मील में काफ़ी पानी बर्बाद होता है;
- वॉशरूम जाने के दौरान भी पानी का ख़र्च कम किया जा सकता है;
- बिजली की बर्बादी रोकी जा सकती है;
- विद्यालय में कौन-सी ऐसी चीज़ें हैं जो बर्बाद हो रही हैं, और उनका उपयोग किया जा सकता है;
- पौधों को सूखने से रोका जा सकता है, और फूल तोड़ने पर रोक लगाई जा सकती है; आदि?

इन सब दिक़्क़तों की पहचान करने के बाद विद्यार्थियों ने योजनाबद्ध तरीक़े से अपनी एक टीम बनाई, और ज़िम्मेदारी ली कि संसाधनों का दुरुपयोग नहीं होने देंगे। अपनेपन, जुड़ाव और मिलकर ज़िम्मेदारी उठाने की भावना विकसित करने के लिए पर्यावरण के प्रति संवेदनशील विद्यार्थियों के समूह को चुना गया, उन्हें टीमों में बाँटा गया, और एक ड्यूटी चार्ट तैयार किया गया। कार्य को बारी-बारी से करने से समूह सक्रिय रहता है, और नएपन का एहसास उनकी ऊर्जा बनाए रखता है।

आगे का सफ़र और परिणाम

एक समन्वयक होने के नाते, मेरा काम है कि सदस्यों को उन विभिन्न शुरुआती चुनौतियों से निपटने में सहायता करूँ जो इको क्लब शुरू करने के दौरान आती हैं। जब शिक्षकों, समुदाय के लोगों, विद्यालय के सहयोगी साथियों को इको क्लब के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी गई तो उन्होंने विद्यालय की बेहतरी के लिए सहयोग करना शुरू कर दिया। सदस्यों ने दोपहर के भोजन के समय, सुबह की सभा और विद्यालय के बाद के समय का उपयोग करके समय प्रबन्धन और कार्यान्वयन कौशल विकसित किया ताकि इको क्लब की गतिविधियों को करते समय उनकी पढ़ाई में रुकावट न आए। इस प्रकार, सकारात्मक सुदृढ़ीकरण और मुश्किलों का सही तरीक़े से समाधान करने से सकारात्मक परिणाम मिलने शुरू हो गए। पाठ्यपुस्तकों से विद्यार्थी अब ज़्यादा जुड़ाव महसूस कर पाने लगे थे। उनकी कुछ जिज्ञासाएँ शान्त हो रही थीं, और कुछ नई जिज्ञासाएँ जन्म ले रही थीं। बतौर शिक्षिका, उनके बदलते हुए सवाल और बढ़ती हुई जिज्ञासाएँ मुझे आश्वस्ति दे रही थीं।

रुचि और भागीदारी को बनाए रखना

सदस्यों को लगातार प्रेरित बनाए रखना निश्चित रूप से एक चुनौती है। इस चुनौती का सामना करने के लिए नियमित रूप से बैठकों का आयोजन करती हूँ। इसके अतिरिक्त, प्रकृति की सैर और आपसी संवाद के लिए प्रोत्साहित करना भी प्रयास का हिस्सा रहा। सर्कल टाइम के दौरान एक पसन्दीदा पौधा गोद

लेने और उसे नाम देने जैसी आइस-ब्रेकिंग गतिविधियाँ भी की गईं। हम एक साथ विचार-मन्थन करते हैं, तथा कार्यक्रमों और गतिविधियों को डिज़ाइन करते हैं। हम 'प्रत्येक सदस्य, बराबर आवाज़ / अवसर' की संस्कृति का पालन करते हैं। यानी यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक सदस्य को अपनी बात कहने के समान अवसर मिलें। उदाहरण के लिए, स्वामित्व की यह भावना तब ख़ूबसूरती से सामने आई जब विद्यालय की सफ़ेदी के बाद विद्यार्थियों के एक समूह ने बचे हुए पेंट को देखा। इसे बर्बाद होने देने के बजाय, उन्होंने सामूहिक रूप से विद्यालय परिसर को सुन्दर बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने अपनी मर्ज़ी से बग़ीचे के गमलों को ख़ूबसूरती से रँगने का काम किया। यह काम किसी शिक्षक का दिया हुआ 'असाइनमेंट' नहीं था, बल्कि सभी सदस्यों द्वारा मिलकर काम करने की स्वाभाविक प्रेरणा से किया गया था।

किचन गार्डन : मेहनत का फल

'किचन गार्डन' एक ऐसा प्रभावशाली कार्यक्रम है, जो मिशन लाइफ़ के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इको क्लब के तहत शुरू किया गया। किचन गार्डन बनाने और उसकी देखभाल के लिए व्यावहारिक रूप से सीखने पर ज़ोर दिया जाता है। बग़ीचे से जुड़े शुरुआती कार्य सीखने से लेकर कुशल माली बनने तक का यह सफ़र विद्यार्थियों को व्यावसायिक अनुभव प्रदान करता है, साथ ही श्रम और धैर्य की गरिमा जैसे मूल्यों को बढ़ावा देता है।

शुरुआत में, एक टीम बीज का मिट्टी में रोपण करने से पहले एक जार के भीतर बीजों के अंकुरण का नियंत्रित तरीक़े से अवलोकन करती है। इसके बाद विद्यार्थी भूमि क्षेत्र को मापते हैं। किचन गार्डन की जगह का चुनाव करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है, इस विषय पर विचार-मन्थन किया जाता है। फिर हम किचन गार्डन की जगह में से तय किए गए हिस्से अलग-अलग टीमों में बाँटते हैं। पौधों के प्रकार चुनने से लेकर स्थानीय रूप से उपलब्ध पाइपों और छड़ियों से बनी बाड़ की ऊँचाई तय करने तक, हर बात का निर्णय लेने में विद्यार्थियों को शामिल किया जाता है। उनसे कहा जाता है कि वे मिट्टी को ज़ोर से दबाने के बजाय गड्ढों में धीरे-धीरे भरें। वे अंकुरों के निकलने, पौधों की ऊँचाई, कीड़ों व पत्तियों के रंग में बदलाव, फूल आने जैसी महत्त्वपूर्ण बातों पर ध्यान देते हैं, और उन पर विचार करते हैं।

अंकुरण के प्रयोग से मिली सीख को ध्यान में रखते हुए पौधों को पानी देने के कार्यक्रम की योजना बनाई जाती है। पानी की मात्रा, पानी देने का समय, और कितनी बार पानी देना है, इन सभी बातों पर ध्यान दिया जाता है। विद्यार्थियों से कहा जाता है कि वे पानी देने से पहले मिट्टी में नमी की जाँच करने के लिए अपनी उँगलियों से मिट्टी को छुएँ, और यह सुनिश्चित करें कि

चित्र 3 : यमुना नदी की सफ़ाई पर विद्यार्थियों के बीच वाद-विवाद प्रतियोगिता

मिट्टी नम हो, लेकिन उसमें ज़्यादा पानी न हो। इस प्रक्रिया का सम्बन्ध अंकुरण के प्रयोग से है। जिस तरह ज़्यादा या कम नमी में बीज अंकुरित नहीं हो सकते, उसी तरह पौधों का जीवन भी पानी के सन्तुलन पर निर्भर करता है। अलग-अलग पौधों को पानी देने का कोई सामान्य नियम नहीं है। यह क्लब के सक्रिय हस्तक्षेप के माध्यम से अनुभवात्मक अधिगम का एक जीवन्त उदाहरण है, जहाँ विद्यार्थी प्रत्यक्ष अनुभव से सीखते हैं।

किचन गार्डन से अपनी मेहनत का फल पाना सभी के लिए एक बहुत अच्छा अनुभव होता है। हर साल जब विद्यार्थी अपनी-अपनी ज़मीन के हिस्से में उगी फ़सल को देखते हैं, वे जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण क्षरण के प्रभावों को समझ पाते हैं। विद्यार्थियों के मिट्टी से सने हाथ पर्यावरण को बचाने के लिए कुछ करने के उनके पक्के इरादे का सबूत हैं।

कुछ चुनौतियाँ

शुरुआत में, हमारे सामने एक छोटी-सी समस्या आई कि कुछ विद्यार्थी सिर्फ़ मनोरंजन के लिए पौधों से फूल तोड़ रहे थे। लेकिन सुबह की प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों को समझाकर इस समस्या को दूर किया गया। 'फूल मत तोड़ो' जैसे उपदेशात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करने के बजाय, विद्यार्थियों और पौधों के बीच एक भावनात्मक रिश्ता क़ायम किया गया।

विद्यार्थियों ने फूलों पर आने वाले मधुमक्खियों और तितलियों जैसे मेहमानों को देखना शुरू किया, और समझ गए कि फूल तोड़ने से पौधे परागणकर्ताओं को 'आमंत्रित' नहीं कर पाते। अब वे सभी बिना किसी सख़्त नियम के प्रकृति की देखभाल करते हैं। विद्यालय के शान्त समय में तोतों की एक जोड़ी और एक मोर को विद्यालय परिसर में स्वतंत्र रूप से घूमते हुए देखा गया। ये दृश्य हमारे विद्यालय के पारिस्थितिकी तंत्र की बढ़ती जैव विविधता का जीता-जागता सबूत हैं। यह हमारी टीम के प्रकृति को बचाने के लिए किए जा रहे प्रयासों का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

कीर्ति लांबा दिल्ली के शालीमार बाग़ स्थित सीएम श्री स्कूल, बीएल ब्लॉक में सामाजिक विज्ञान की प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (टीजीटी) हैं। वे विगत 19 वर्षों से अध्यापन कर रही हैं। कीर्ति अपने विद्यालय में 'इको क्लब फ़ॉर मिशन लाइफ़' की समन्वयक हैं, और 'पर्यावरण योद्धाओं' का एक समूह बनाकर प्रकृति के संरक्षण में अपना दायित्व निभाती हैं।

सम्पर्क : kirtilamba25@gmail.com